स्कूलों को दोबारा खोलने में समुदाय को संलग्न करना

मोहम्मद अली रिज़वी

परिदृश्य

कोविड-19 महामारी को आए अब क़रीब दो वर्ष हो चुके हैं। हमारे देश ने देशव्यापी तालाबन्दी, दो भयावह लहरें, लाखों लोगों की मृत्यु, स्कूलों का बन्द होना, नौकरियों का जाना, व्यापार अस्त-व्यस्त होना देखा है और हम अभी भी अपने भविष्य के विषय में कुछ नहीं कह सकते; हम तीसरी लहर का इन्तज़ार कर रहे हैं जो विशेषज्ञों के अनुसार बिलकुल नज़दीक है।

अब दूसरी लहर के सन्नाटे के बाद जीवन पूरी गति पकड़ चुका है। दुकानों, बाज़ारों ने अपना व्यापार पुनः शुरू कर दिया है, नौकरियाँ शुरू हो गई हैं और स्कूलों के अलावा बाक़ी जीवन सामान्य हो चुका है। विद्यार्थियों के अभाव में प्राथमिक स्कूल अभी भी उजाड़ लगते हैं क्योंकि बस थोड़े-से स्कूलों में शिक्षक और ज़रा-से विद्यार्थी आ रहे हैं। शिक्षक, सोशल मीडिया इंटरफ़ेस फ़ॉर लर्निंग एंगेजमेंट (स्माइल) प्रोग्राम के ज़रिए ऑनलाइन शिक्षण को जारी रखने के दबाव में हैं। अक्सर, वे नई भेजी गई वर्कशीट प्राप्त करने के लिए नेटवर्कों में उलझे पाए जाते हैं। उन्हें वर्कशीट के विषय में वीडियो भी मिलते हैं, लेकिन ज़्यादातर स्थितियों में विद्यार्थियों को बिना इन सहायक वीडियो को देखे ही वर्कशीट पूरी करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में, जब शिक्षक आधिकारिक रूप से विद्यार्थियों को स्कूल में नहीं बुला सकता तो उसके लिए यह एक चुनौती है कि वह पाठ पढ़ाए या वीडियो दिखाए, और एक-एक विद्यार्थी के घर जाकर उन्हें वर्कशीट देना तो अव्यावहारिक है। हालाँकि, शिक्षक वीडियो लिंक और वर्कशीट अभिभावकों को भेज देते हैं, लेकिन ज़्यादातर विद्यार्थियों के पास स्मार्टफ़ोन नहीं होते। परिवार में फ़ोन सिर्फ़ पिता के पास होता है, जो अपने काम पर उसे ले जाते हैं। जिन विद्यार्थियों के पास स्मार्टफ़ोन होते हैं उन्हें डाटा पैक और नेटवर्क कनेक्टिविटी उपलब्ध नहीं हो पाती है। यह भी हक़ीक़त है कि, किसी भी विद्यार्थी को मोबाइल गेम खेलने या अपनी पसन्द के वीडियो देखने की बजाय अपने शिक्षक द्वारा भेजे गए पूरे वीडियो देखने और वर्कशीट पूरा करने के लिए काफ़ी प्रेरणा की ज़रूरत होगी। निष्कर्ष के तौर पर, बाड़मेर जैसी ग्रामीण जगहों में ऑनलाइन शिक्षण शिक्षकों को यह भ्रान्ति देता है कि वे पढ़ा रहे हैं और अभिभावकों को यह भ्रान्ति देता है कि उनके बच्चे सीख रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा पर कई संस्थाओं द्वारा सर्वेक्षण और अध्ययन किए गए हैं, जिनमें अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भी शामिल है, और इनके परिणाम इस तरह की शिक्षा की प्रभावहीनता और सीमाओं को जाहिर करते हैं, ख़ासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों में।

ऐसे परिदृश्य में, जहाँ हमने शिक्षा में लगभग दो वर्षों का नुक़सान देखा है, बस यह मान लेने की बजाय कि ऑनलाइन शिक्षण में सीखने का क्रम जारी है, हमें स्कूलों को दोबारा खोलने के ठोस, सम्भव और सुरक्षित तरीक़े सोचने की ज़रूरत है। बहुत से देशों ने और कुछ भारतीय राज्यों ने भी स्कूलों को खोल दिया है, हालाँकि स्कूलों को खोलने और उन्हें पूरी क्षमता से चलाने से *कोविड-19* के फैलने का डर और भी बढ़ जाता है। बस शायद इसी कारण ज़्यादातर राज्यों ने प्राथमिक कक्षाओं को खोलने के बारे में अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है।

यह डर तब तक बरकरार रहेगा जब तक हमें अपने विद्यार्थियों के लिए वैक्सीन नहीं मिल जाती और उन सब को वैक्सीन लग नहीं जाती जो कि अपने आप में एक लम्बी और थकाऊ प्रक्रिया है। तो हमें प्राथमिक कक्षाओं के लिए क्या करना होगा? क्या हमें ऑनलाइन कक्षाएँ ही जारी रखनी चाहिए या हमें विद्यार्थियों से रूबरू होने के तरीक़े सोचने चाहिए और इसके लिए कुछ स्कूलों के शिक्षकों ने छोटे समूहों में कार्य करने के तरीक़े निकाले हैं। बाड़मेर की एक पंचायत के पंचायत प्राथमिक शिक्षा अधिकारी (पीईईओ) ने सुरक्षित और संरक्षित वातावरण में सामान्य कक्षाएँ लगाने का तरीक़ा ढूँढ़ने का निर्णय लिया क्योंकि हम सरकार द्वारा स्कूल खोले जाने का इन्तज़ार नहीं कर सकते। हमें विद्यार्थियों की व्यक्तिगत उपस्थिति में कक्षाएँ लगाने का तरीक़ा ढूँढ़ने की ज़रूरत थी और हमने स्थानीय लोगों की सहायता से यह कार्य कर दिखाया।

स्थानीय लोगों की भागीदारी

शिक्षकों ने कुछ ऐसे बच्चों को ढूँढ़ा जिनके घर एक-दूसरे से काफ़ी नज़दीक हैं, वे एक साथ समय बिताते हैं और साथ खेलते हैं। विद्यार्थियों के लिए नियमित कक्षाओं के विषय में स्थानीय लोगों से चर्चा हुई और वे सभी कक्षाओं की योजना तैयार करने में योगदान देने लगे। प्रत्येक प्राथमिक स्कूल द्वारा दो से तीन ऐसे स्थान ढूँढ़े जा सकते थे जहाँ विद्यार्थी समूह में

रहते हैं। फिर, कक्षाएँ लगाने के लिए एक जगह तय की गई जो या तो खुली जगह थी या फिर कोई बड़ा हॉल जहाँ विद्यार्थी *कोविड-19* के नियमों का पालन करते हुए बैठ सकें। ऐसा करना छोटे समूहों में आसानी से सम्भव था। स्थानीय लोगों को भी इस बारे में चिन्ता नहीं हुई क्योंकि सभी विद्यार्थी या तो आपस में रिश्तेदार थे या एक-दूसरे के परिचित थे।

ग्रामीण बाड़मेर में ढाणी भरी पड़ी हैं जहाँ आमतौर पर, एक कुनबे या परिवार या ऐसे लोगों के घरों के समूह होते हैं, जो एक जाति या एक-सी जीवनशैली की वजह से एक-दूसरे के काफ़ी नज़दीक होते हैं। हमारे सहयोगियों ने, जो शिक्षण का अभ्यास और पंचायत के शिक्षकों की सहायता कर रहे थे, इन कक्षाओं को ढाणी कक्षाएँ कहा। इन कक्षाओं का समय बाड़मेर के उच्च तापमान को ध्यान में रखकर सुबह 7:30 से 11:00 रखा गया। कक्षाओं के लिए विद्यार्थी समय से इकट्ठे होते थे। असामान्य व्यवस्था और इतने लम्बे समय के बाद कक्षा में भाग लेने के कारण विद्यार्थी बहुत रोमांचित थे। यह कक्षाएँ विद्यार्थियों के लिए पिछले 18 महीनों की उबाऊ घरेलू ज़िन्दगी से निकलने के लिए शरण स्थली की तरह थीं। खेता राम जैसे पहली पीढ़ी के विद्यार्थी के लिए, जो अपने स्कूली जीवन के दो सालों के नुक़सान को लेकर बहुत निराश था, यह ख़ुशी का मौका था क्योंकि वह अपने पसन्दीदा विषय अपने शिक्षकों से पढ़ पा रहा था।

कक्षा में वापसी

ये कक्षाएँ शिक्षकों के लिए कई चुनौतियाँ लेकर आईं। पहली बड़ी चुनौती थी बहु-श्रेणीय और बहुस्तरीय (एमजीएमएल) कक्षाओं से दो-चार होना। भले ही यह चुनौती बड़ी दिख सकती है लेकिन एक तरह से यह पूर्व तैयारियों को कम करने में सहायक थी क्योंकि एमजीएमएल की एक पाठ योजना को (कुछ विविधता के साथ) लगभग सभी ढाणी कक्षाओं में काम में लाया जा सकता था। दूसरी कठिनाई समय प्रबन्धन की रही। इन कक्षाओं के स्थानों के बीच की दूरी 2 से 5 किमी के बीच थी और कुछ जगहों पर पहुँचने के लिए रेतीले रास्तों या रेत के टीलों को पार करना पड़ता था। इससे निपटने के लिए शिक्षकों ने अपने स्कूलों में शिक्षकों की संख्या के हिसाब से टाइमटेबल बनाया। उदाहरण के लिए, अगर एक स्कूल में दो शिक्षक थे और उन्हें हमारी ढाणियों में आना होता था तो वे हफ़्ते में दो या तीन कक्षाएँ लेते थे। यह देखने में भले ही कम लगे, लेकिन जिन विद्यार्थियों का औपचारिक शिक्षा से लम्बे समय से सम्पर्क न हो, उनके लिए यह अपने नुक़सान की भरपाई और स्कूलों के नियमित रूप से खुलने के समय की तैयारी का अच्छा अवसर है।

कोविड-19 के नियमों का पालन करना भी काफ़ी कठिन काम है जैसे विद्यार्थियों को हमेशा उचित दूरी बनाकर रखने और मास्क लगाए रखने के लिए प्रेरित करना। लेकिन अभिभावकों और स्थानीय लोगों की भागीदारी से ये चिन्ताएँ कम हुईं। पानी, शौचालयों की कमी, कक्षा एक और दो के उन बच्चों को सम्भालना जो कभी औपचारिक कक्षा में शामिल नहीं हुए थे - ये कुछ चुनौतियाँ थीं जो सामने आईं। लेकिन इन सभी समस्याओं को स्वीकार करके इनके समाधान खोजने के लिए उठाई गई ज़हमत अंततः सफल रही क्योंकि इन प्रयासों की वजह से बच्चों को सीखता देखकर बहुत राहत और सन्तोष मिलता है। भले ही शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाओं में बहुत मेहनत की लेकिन उनका वह प्रयास विद्यार्थियों के लिए ज़्यादा हितकारी साबित नहीं हुआ।

हमारी सीख

इस विचार को सफल बनाने के लिए ज़रूरी है कि स्कूलों को पुनः खोलने और आमने-सामने बैठाकर कक्षाएँ फिर से शुरू करने की योजनाओं में स्थानीय लोगों को शामिल किया जाए। बाड़मेर में, शिक्षकों के थोड़े-से साहस और स्थानीय लोगों के सहयोग ने, आधिकारिक रूप से स्कूलों के दोबारा खुलने तक, विद्यार्थियों के लिए अस्थायी कक्षाएँ बनाने का काम कर दिखाया। जब स्कूल खुलेंगे तब ये सबक़ अमूल्य साबित होंगे।

*बच्चों की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।



मोहम्मद अली रिज़वी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बाड़मेर, राजस्थान में पिछले पाँच वर्षों से टीचर-एजुकेटर हैं। उनकी रुचि का विषय है बच्चों का भाषा सीखना। उन्होंने अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर किया है। घुड़सवारी, फ़ोटोग्राफ़ी और भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के भ्रमण में उनकी गहरी रुचि है। उनसे ali.rizvi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनुज उपाध्याय

योजना बनाने का समय अब है

नवलेश कुमार

पिछले कई दिनों से फील्ड में भ्रमण करने और स्कूल के शिक्षकों से लगातार संवाद करने के बाद मैं यह कह सकता हूँ कि शिक्षक भी स्कूल खोलने के पक्ष में हैं। उनका भी यही मानना है कि बच्चे जो चीज़ फेस-टू-फेस और संवाद से सीखते हैं, उसका कोई दूसरा विकल्प न था, और न है।

पहली कक्षा के एक बच्चे से आप क्या उम्मीद रखते हैं? जो बच्चा पिछले डेढ़ साल से स्कूल नहीं गया हो, जिसने अपने शिक्षक को न के बराबर देखा हो, जिसे यह भी पता न हो कि आख़िर यह *कोविड-19* है क्या? जिसका बचपन मिट्टी में खेलते-कूदते बीत रहा हो, जो अपना थोड़ा-बहुत पढ़ा हुआ लगभग भूल चुका हो, क्या आप उससे यह उम्मीद रखते हैं कि वह एकाएक बिना किसी सपोर्ट के पढ़ना-लिखना फिर से शुरू कर दे? क्या उससे यह उम्मीद रखते हैं कि आप उसको एक वर्कशीट हाथ में थमा देंगे और वह उसे ख़ुद से करना शुरू कर देगा? या फिर आप उससे यह उम्मीद रखते हैं कि फ़ोन में वीडिओ चलाकर उसके सामने रख देंगे और वह अपने आप चीज़ों को समझने लगेगा?

यह सब इतना आसान नहीं है

जो क्षति बच्चों को इस महामारी में हुई है, उसकी पूर्ति के बाद ही अगर हम आगे के पठन-पाठन की योजना बनाते हैं तभी सही मायने में बच्चों की सहायता कर पाएँगे। शिक्षकों को अपने स्तर से बच्चों के साथ संवाद स्थापित करना होगा। बच्चों की सामाजिक, पारिवारिक, मानसिक और शारीरिक स्थिति क्या है, उसको ध्यान में रखकर ही आगे की सभी योजनाएँ बनानी होंगी। यह भी हो सकता है कि शिक्षक को हरेक बच्चे के लिए अलग-अलग योजना बनानी पड़े। क्यूँकि इन डेढ़ सालों में बच्चे अलग-अलग तरीक़े से प्रभावित हुए हैं और उनकी शैक्षणिक क्षति भी अलग-अलग है। शिक्षकों को बच्चों के अलावा उनके माता-पिता से भी लगातार सम्पर्क में रहकर उनके साथ संवाद स्थापित करना होगा। गाँव के जो शिक्षित लोग हैं, वे शिक्षकों के साथ मिलकर एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। *कोविड-19* के लिए ज़रूरी सारे सुरक्षा-निर्देशों का पालन करते हुए शिक्षकों को बच्चों के साथ फेस-टू-फेस एन्गैज्मन्ट शुरू करना होगा। पूरे काम को एक प्लान के तहत करना होगा।

सीखने की क्षति

शुरूआत में थोड़ी दिक़्क़त आ सकती है। यह लाज़िमी भी है क्यूँकि लगभग दो सालों से पढ़ाई-लिखाई का काम सुचारू रूप से नहीं हुआ है। बच्चों को स्कूल की नियमित समय-सारिणी और तौर-तरीक़ों को अपनाने में समय लग सकता है। शुरुआती समय में शिक्षकों को तरह-तरह की गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के साथ जुड़ना होगा। उन्हें ऐसी गतिविधियाँ ढूँढ़नी होंगी, जिनसे बच्चों को सीखने में जो क्षति हुई है उसको बहाल करने में मदद मिले और आगे के शिक्षण-कार्य को गति मिल सके। विद्यालय खुलने के बाद शिक्षकों को अपने पढ़ाने के तौर-तरीक़े में भी काफ़ी बदलाव करने होंगे।

फील्ड विज़िट के दौरान शिक्षक शिव कुमार (राजकीय प्राथमिक विद्यालय, माइलागोड) से इस बारे में बात हो रही थी कि स्कूल खुलने के बाद बच्चों के साथ किस प्रकार काम होगा। वे बताते हैं कि जितना आसान सरकार और लोग सोच रहे हैं कि स्कूल खुल जाएगा और बच्चे फिर से स्कूल जाने लगेंगे, सीखने और सिखाने का काम पहले की तरह चलने लगेगा, तो ऐसा बिलकुल नहीं है। वे बताते हैं कि इतने दिन से स्कूलबन्दी ने बच्चों के मानसिक स्तर के साथ उनके शारीरिक और भावनात्मक स्तर को भी प्रभावित किया है। बच्चों की एक जगह पर देर तक बैठने और ध्यान केन्द्रित करने की आदत छूट गई है। यह उनके लिए और शिक्षकों के लिए भी एक चुनौती के समान होगा कि वे कक्षा में ध्यान दें।

अन्य क्षतियों का प्रभाव

जिन बच्चों का डेढ़ साल से किसी भी प्रकार का कोई सामाजिक इंटरेक्शन नहीं हुआ है, उनको शुरुआत में शिक्षकों से बातचीत करने में भी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यह भी हो सकता कि बच्चे अपने इमोशन को पहले की तरह सबके सामने उजागर नहीं कर पाएँ।

यह बात किसी से छुपी हुई नहीं है कि आर्थिक रूप से कमज़ोर ऐसे कई सारे परिवार हैं जो अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में सिर्फ़ इसलिए भेजते हैं ताकि उनके बच्चों को कम-से-कम एक समय का पौष्टिक भोजन मिल सके। स्कूलबन्दी के कारण इस तरह के परिवार के बच्चों को शारीरिक तौर पर भी अच्छा-ख़ासा नुकसान हुआ है। स्कूल खुलने के बाद सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मिड-डे-मील की पौष्टिकता को

बढ़ाया जाए और बच्चों को एक अच्छा आहार परोसा जाए। कुल-मिलाकर एक जटिल तस्वीर है हमारे सामने। हमें अभी से इन सब चीज़ों पर काम करना शुरू कर देना होगा ताकि स्कूल खुलने के बाद हमारे इन कामों को गति मिल सके और एक तय योजना के तहत बच्चों के साथ काम किया जा सके।

यह सिर्फ़ एक शिक्षक की चिन्ता नहीं है। मैं ऐसे अनेक शिक्षकों से मिला हूँ जिनकी राय कमोबेश समान ही है। बच्चों से मिलने पर भी वह क्षति साफ़-साफ़ नज़र आती है, जो उन्हें हुई है। अगर बात सिर्फ़ बच्चों की शैक्षणिक क्षति तक सीमित होती तो शिक्षकों के लिए काम करना आसान हो जाता। शैक्षणिक क्षति के साथ-साथ ऐसी कई महत्त्वपूर्ण क्षतियाँ हुई हैं, जो बच्चे के सम्पूर्ण विकास में बाधा पहुँचा सकती हैं और जिनसे उनके आगे के शैक्षणिक स्तर पर भी काफ़ी असर पड़ सकता है।

आगे का रास्ता : कुछ विचार

तो यह बात तो हो गई कि आख़िर किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन जब मैं शिक्षकों से साथ बात करता हूँ तो मैं इन सारी चुनौतियों का समाधान ढूँढ़ने की भी कोशिश करता हूँ। साथ में यह भी जानने की कोशिश करता हूँ कि स्कूल खुलने के बाद बच्चों को एन्गैज रखने के लिए वे अपने स्तर से क्या-क्या तैयारियाँ कर रहे हैं? जहाँ ज़्यादातर शिक्षकों को स्कूलों को दोबारा खोलने की तैयारी का काम मुश्किल लग रहा है, वहीं कुछेक शिक्षक ऐसे भी हैं जो अपने स्तर से कुछ करने की सोच रहे हैं। मैं यहाँ इनमें से कुछ पर चर्चा करता हूँ :

व्यक्तिगत समस्याओं को समझना

एक तरीक़ा तो यह हो सकता है कि स्कूल खुलने से पहले ही शिक्षक घर-घर जाकर बच्चों से मिलना शुरू कर दें। यह मिलना सिर्फ़ होमवर्क देने और वर्कशीट लेने तक सीमित नहीं होना चाहिए। शिक्षक को बच्चे और उनके माता-पिता के साथ एक संवाद करने की आवश्यकता है। एक ऐसा संवाद जिसमें बच्चे और उनके अभिभावक खुलकर हरेक मुद्दे पर बात कर सकें। वे बता सकें कि *कोविड-19* ने उनको और उनके बच्चे को किस तरीक़े से प्रभावित किया है, उनके बच्चे को स्कूलबन्दी के कारण क्या-क्या चीज़ें झेलनी पड़ीं उनकी ज़िन्दगी में पहले से क्या परिवर्तन आए हैं और अब वे स्कूल को किस नज़रिए से देख रहे हैं। एक शिक्षक जब उस बच्चे से बात करता है जिसे वह पढ़ाया करता था तो उसे ख़ुद-ब-ख़ुद समझ आ जाता है कि उस बच्चे में पहले की तुलना में क्या बदलाव आया है। हो सकता है, बच्चे को बात करने में भी झिझक महसूस हो। इसलिए शिक्षक को अपने बच्चों से बार-बार मिलना चाहिए ताकि वे आसानी-से खुलकर बात कर सकें।

बच्चों के छोटे समूहों के साथ जुड़ना

दूसरी चीज़ यह है कि शिक्षक अपने स्तर पर बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाकर अभी से ही स्कूल बुलाएँ और खेलकूद सहित तरह-तरह की गतिविधियों के माध्यम से उनको एन्गैज करना शुरू कर दें। ऐसा बिलकुल न हो कि बच्चों को स्कूल में बुलाया जाए और उनको बस एक वर्कशीट हाथ में थमाकर उसे सॉल्व करने को बोल दिया जाए। शिक्षक बच्चों के साथ बैठकर मूवी देखें, उनकी कहानियों को सुनें, उनको कहानियाँ सुनाएँ। उन पर बात करें। उनके साथ बगीचे में घूमें, पेड़-पौधों और जीव-जन्तुओं के बारे में बात करें। अभी भी बच्चों को यह समझ नहीं है कि यह *कोविड-19* क्या बीमारी है या उनके स्कूल इतनों दिनों से बन्द क्यों हैं, वैक्सीनैशन किस तरह काम करता है। शिक्षक इन सब चीज़ों को बच्चों को सरल भाषा में, एनिमेशन के माध्यम से, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से, कुछ मॉडल के माध्यम से समझाने का काम करें। यह बेहद ज़रूरी है क्यूँकि वैक्सीनैशन को लेकर जो भी भ्रान्तियाँ हमारे समाज में फैली हुई हैं, वे बच्चों को भी प्रभावित कर रही हैं। अगर इस समय उनकी भ्रान्तियों को दूर नहीं किया गया तो जब उनको टीका लगवाने की बारी आएगी तो वे इसके लिए तैयार नहीं होंगे।

बच्चे क्या चाहते हैं?

हम अक्सर बच्चों की राय और उनके सोचने के नज़रिए को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं। एक तरफ़ हम बात करते हैं कि शिक्षण के दौरान हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे लोकतांत्रिक मूल्यों को भी सीख और समझ सकें। दूसरी तरफ़ हम उन्हीं के लिए किए जा रहे कार्यों में उनकी राय लेना ज़रूरी तक नहीं समझते। स्कूल खोलने को लेकर हमें बच्चों की राय को भी जानना और समझना चाहिए। आख़िर बच्चे क्या चाहते हैं? क्या वे चाहते हैं कि स्कूल खुलें और वे पहले की तरह वहाँ जाएँ? कुछ लोगों को यह लग सकता है कि बच्चों की राय उतनी ज़रूरी नहीं है, क्यूँकि उनमें इतनी समझ नहीं है कि वे इस तरह के मामले में अपना पक्ष रख सकें। हो सकता है कि बच्चे के पास स्कूल खुलने या न खुलने को लेकर कोई ठोस उत्तर नहीं हो, लेकिन वे अपने स्तर से तो बता ही सकते हैं कि वे क्या सोचते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने कई बच्चों से बातचीत की और स्कूल खुलने के बारे में उनकी राय जानने की कोशिश की। वे सब यही चाहते हैं कि सब कुछ ठीक हो जाए ताकि वे पहले की तरह स्कूल में मस्ती कर सकें।

सर,कोरोना काल में हम सब भूल गए। स्कूल बन्द था तो हम दिन भर घर पर रहते थे। मन नहीं लगता था। स्कूल रहता था, तब दोस्तों के साथ ख़ूब खेलते थे और मस्ती करते थे। आते-

जाते पूरे रास्ते में दोस्तों के साथ मस्ती करते थे। स्कूल के सर भी हमें तरह-तरह के खेल खिलाते थे। जल्दी से स्कूल खुल जाए और हम दोस्तों के साथ फिर से मस्ती कर पाएँ।

—विमला, कक्षा-5

जब से स्कूल बन्द हुए हैं, मुझे घर का बहुत सारा काम करना पड़ता है। मैं घर में ही रहती हूँ और बाहर जाने पर मम्मी-पापा डाँटते हैं। दोस्तों के साथ दौड़ना, उनके साथ स्कूल से लौटते समय दुकान से बिस्किट लेकर खाना बहुत पसन्द था। स्कूल के शिक्षक भी मुझे बहुत कुछ खिलाते थे, लेकिन स्कूल बन्द हो जाने से अब वह भी नहीं मिलता है। स्कूल खुल जाने के बाद मैं फिर से सर से बोलूँगी कि वे मुझे तरह-तरह की चीज़ें खिलाएँ।

—वन्दना, कक्षा-4

सर,स्कूल में हमें बहुत मज़ा आता था। टीचर के साथ भी हम बहुत मस्ती करते थे। स्कूल में हम पढ़ते थे, खेलते थे। स्कूल में हम खाना खाते थे और बाँटते भी थे। स्कूल में हम भगवान की पूजा करते थे। स्कूल जल्दी से खुल जाए, तो हम फिर से यह सारी चीज़ें कर पाएँगे।

—उम्मेद, कक्षा-4



नवलेश कुमार ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। शिक्षा के ज़रिए सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक कार्य के लिए अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए वह 2020 में एसोसिएट के रूप में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में शामिल हुए। उन्हें विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर पढ़ना व लिखना पसन्द है और वह एक नियमित स्वैच्छिक रक्तदाता हैं। उनसे nawlesh.kumar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।